समर्पण

परम पूज्य माता स्व. मंगल को
कृतज्ञता से समर्पित। इनकी
ममता, संस्कार, त्याग और
आशीर्वाद से यहाँ तक पहुँचने
का सुअवसर प्राप्त हुआ तथा यह
कार्य संपन्न हुआ है। उनके प्रति
नत होना मैं अपना सद्भाग्य
समझती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय ★ हिंदी विभाग ★ कोल्हापुर.

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि सौ. संध्या प्रेमचंद लाड द्वारा लिखित ''अमरकांत की कहानियों में विविध संघर्ष'' ('मौत का नगर' कहानी संग्रह के संदर्भ में) इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 2 3 JUN 2006

23.06.06

अध्यक्ष

हिंदी विभाग,

शिवाजी विश्वविद्यालय,

कोल्हापुर।

Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004

डॉ. आशा एस्. मणियार
हिंदी पंडित, एम्.ए., एम्.फिल्., पीएच्.डी.
प्रपाठक
स्नातक तथा स्नातकोत्तर,
हिंदी विभाग,
देवचंद महाविद्यालय, अर्जुननगर
एवं
मानद व्याख्याता, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि **सौ. संध्या प्रेमचंद लाड** ने मेरे निर्देशन में **''अमरकांत की कहानियों में विविध संघर्ष'' ('मौत का नगर' कहानी संग्रह के संदर्भ में)** लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए सफलता पूर्वक एवं पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। उनकी रचना के जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं वे मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोधछात्रा के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि 23 JUN 2006

शोध निर्देशिका

(डॉ. आशा एस्. मणियार)

प्रख्यापन

"अमरकांत की कहानियों में विविध संघर्ष" ('मौत का नगर' कहानी संग्रह के संदर्भ में) यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 2 3 JUN 2006

शोध छात्रा

(सौ. संध्या प्रेमचंद लाड)

प्राक्कथन

आधुनिक हिंदी कहानी के निर्माण और विकास में अमरकांत के ऐतिहासिक योगदान को सभी स्वीकार करते हैं। सन् 1950 से वह निरंतर लिख रहे हैं और इस बीच आपने हिंदी साहित्य को कुछ ऐसी कहानियाँ दी हैं जो विश्व की श्रेष्ठतम् कहानियों के बीच रखी जा सकती हैं। अमरकांत अपनी जमीन से जुड़े हुए ऐसे कहानीकार हैं जो शिल्प की बुनावट और रोमांटिक भावुकता के बल पर कभी खड़ा होने की कोशिश नहीं करतें। साधारण जीवन से उठाये हुए आपके पात्रों के द्वंद्व और क्रियाकलाप, सच्चाइयों का अन्वेषण करते नजर आते हैं।

अमरकांत की एक विशेषता यह है कि समाज के बदलावों पर आपकी बड़ी पैनी निगाह रहती है। आपकी दर्जनों कहानियाँ अपने समय की मूलधारा को अतिक्रमित करने के कारण ऐतिहासिक महत्त्व की दावेदार हैं जो कई स्तरों पर पूर्नमूल्यांकन की माँग करती हैं। अमरकांत फैशन, प्रदर्शन और विभिन्न कहानी आंदोलनों से अलग रहकर निरतंर रचनाशील बने रहे यही आपकी विशेषता है।

अमरकांत मूलतः प्रगतिशील और मानव मूल्यों के कहानीकार हैं, आपकी कहानियों में मानवीय संवेदना है, अनुभूति है, जीवन का यथार्थ है। आपकी कहानी का पात्र जीवन मूल्यों तथा पारिवारिक संबंधों को भौतिकवादी विचारधारा के आधार पर तोड़ता है। आपने निम्नवर्गीय व्यक्ति की नस को पकड़ने की कोशिश की है। निम्न और मध्यवर्गीय व्यक्ति के जुझते हुए नयी आर्थिक विषमता में मजबूरियों का चित्रण आप अपनी कहानियों में करते हैं।

एक बार मेरे हाथ अमरकांत जी का 'मौत का नगर' कहानी संग्रह लगा। उसे पढ़ने तथा शोधकार्य के पश्चात् उससे प्रभावित होकर आपके साहित्य पर शोधकार्य करने की रूचि मन में निर्माण हो गई। तभी मैंने आपके इस कहानीसंग्रह पर शोधकार्य करने का निश्चय कर लिया।

✷ इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उठें -

1. अमरकांत जी का जीवन किस तरह बीता ?
2. क्या अमरकांत जी की कहानियों में संघर्ष दिखायी देता है ?

3. अमरकांत जी की कहानियों में संघर्ष का स्वरुप किस प्रकार का है ?

4. अमरकांत जी के पात्रों की विशेषताएँ क्या है ?

5. कथाकार के रूप में आप किस तरह परिचित हैं ?

6. अमरकांत जी का हिंदी साहित्य में क्या योगदान है ?

इन सवालों का हल ढूँढ़ने के लिए मैंने अमरकांत जी की कहानियों के प्रमुख पात्रों का संघर्ष कैसा है यह अध्ययन में विभाजित है।

✷ अध्याय विभाजन

✷ प्रथम अध्याय - अमरकांत का व्यक्तित्व और कृतित्व

इसके अंतर्गत मैंने सर्वप्रथम अमरकांत का जीवन परिचय दिया है। इस संदर्भ में जन्म, माता-पिता, शिक्षा, बचपन, पारिवारिक जीवन, प्रभाव और प्रेरणाएँ तथा आपके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। साथ ही आपकी साहित्य साधना के दौर का उल्लेख करते हुए आपकी विविधयामी साहित्य रचनाओं पर प्रकाश डाला है। अंत में अमरकांत जी की समग्र रचनाओं की सूची प्रस्तुत की है।

✷ द्वितीय अध्याय - कथाकार के रूप में अमरकांत का संक्षिप्त परिचय

इसके अंतर्गत मैंने कथाकार का जीवन कैसा है और कथाकार के रूप में अमरकांत किस तरह परिचित है इसकी चर्चा प्रस्तुत अध्याय में की गयी है और अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ तृतीय अध्याय - 'मौत का नगर' की कहानियों का कथ्य

इसके अंतर्गत मैंने 'मौत का नगर' कहानी संग्रह की सभी कहानियों का कथ्य बताया है। राजनीतिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक इन्हीं मुद्दों को लेकर कहानियों का कथ्य स्पष्ट किया हैं। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ चतुर्थ अध्याय - 'मौत का नगर' के पात्रों का पारिवारिक तथा आर्थिक संघर्ष

इसके अंतर्गत मैने पारिवारिक तथा आर्थिक संघर्ष किस प्रकार के होते है ? इसकी चर्चा की है। भारतीय समाज व्यवस्था में पारिवारिक तथा आर्थिक संघर्ष से छुटकारा पाने के लिए लोगों को किन समस्याओं से गुजरना पड़ता है तथा पात्रों का जीवन किस प्रकार का है इसी का चित्रण किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ पंचम अध्याय - 'मौत का नगर' के पात्रों के अन्य संघर्ष

इसके अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, मानसिक संघर्षो की चर्चा की है। प्रस्तुत अध्याय में सीधे-साधे विद्रोह न करने वाले पात्रों को संघर्षो का सामना करना पड़ता है। इसी का चित्रण प्रस्तुत अध्याय में किया है और अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

✷ उपसंहार

समग्र अध्यायों के विवेचन-विश्लेषण के उपरांत 'उपसंहार' लिखा है। तद्उपरांत परिशिष्ट क्र. 1 दिया है। उसमें प्रश्नावली तथा अमरकांत जी का पत्र दिया है। जिसका उपयोग लघु शोध-प्रबंध के लेखन में हुआ है।

अंत में आधार ग्रंथ तथा संदर्भ ग्रंथ सूची दर्ज की है।

ऋणनिर्देश

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में सहायता करनेवाले तथा प्रोटसाहित करनेवाले हित चिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रद्धेय गुरुवर्या डॉ. आशा मणियार जी के निर्देशन में पूरा किया है। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी आपने समय-समय पर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति पूर्ण और उत्साहित रखा। आपके मार्गदर्शन के बिना तथा आप बार-बार सजग न करते तो शायद यह लघु शोध-प्रबंध अधुरा रह जाता। आपके शांत, गंभीर व्यक्तित्व एवं स्नेहलभाव के कारण यह प्रबंध पूर्ण हो सका। तथा आपके परिवार के प्रति भी आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का आशीर्वाद मेरे साथ रहा, आपके प्रति सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

श्रद्धेय अमरकांत जी की भी आभारी हूँ। आपने मुझे समय-समय पर किताबें तथा पत्र भेजकर मेरी शंकाओं का निरसन किया तथा शोध कार्य के प्रति बड़ी उत्सुकता प्रकट की। इसलिए आपके सहयोग की भी मैं ऋणी हूँ।

इस शोध कार्य में पग-पग पर मेरा साथ देने वाले मेरे पति श्री. प्रेमचंद लाड की प्रशंसा मैं किन शब्दों में करूँ ? उनके प्रोटसाहन और अथक सहयोग से ही मैं अपना शोधकार्य पूरा कर सकी। साथ ही मेरे ससुर श्री. पांडुरंग लाड, सास सौ. सुनंदा तथा देवर श्री प्रशांत लाड और श्री. डॉ. प्रितम तथा जेठानी सौ. आरती और देवरानी सौ. डॉ. ललित इन सबने प्रोटसाहन, आशीर्वाद तथा सहायता की। समय समय पर सहयोग और मार्गदर्शन किया। मेरे पूज्य पिताजी मधुकर हुंबरे और भाई

गणेश तथा बहन सुधा इनके आशीर्वाद से मेरा शोधकार्य संपन्न हुआ है। इसलिए मैं इन सबके प्रति हमेशा के लिए ऋणी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से मुझे अनेक ग्रंथों का लाभ हुआ। ग्रंथालय के पदाधिकारी तथा ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनका भी आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे सहपाठी, सहेलियाँ और कई हितचिंतकों की शुभकामनाएँ मेरे साथ रही उनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य का टंकलेखन सुचारू रूप से करनेवाले श्री. विनायक पाटील की भी मैं आभारी हूँ।

अंत में सभी विनम्रता के साथ मैं अपना लघु शोध प्रबंध विद्वज्जनों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 2 3 JUN 2005

सौ. संध्या प्रेमचंद लाड